

## लाभ एवं गरीबी: बलात् श्रम का अर्थशास्त्र

### प्रलिम्स के लिये:

लाभ एवं गरीबी: बलात् श्रम का अर्थशास्त्र, [अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन](#), [बलात् श्रम](#)

### मेन्स के लिये:

लाभ एवं गरीबी: बलात् श्रम का अर्थशास्त्र

[स्रोत: द हट्टि](#)

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में [अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन](#) ने 'लाभ एवं गरीबी: बलात् श्रम का अर्थशास्त्र' शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें पाया गया कि [बलात् श्रम](#) प्रतिवर्ष 36 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अवैध लाभ प्राप्त किया है।

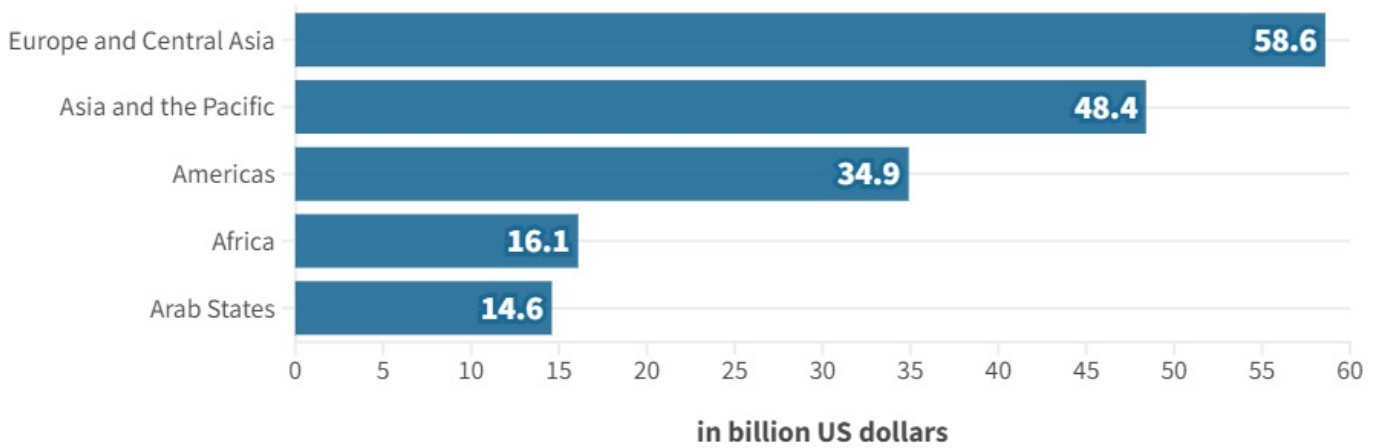
## बलात् श्रम क्या है?

- ILO के अनुसार बलात् या अनविर्य श्रम "सभी कार्य या सेवा है जो किसी भी व्यक्ति से किसी दंड के खतरे के तहत लिया जाता है एवं जिसके लिये उक्त व्यक्ति ने स्वेच्छा से स्वयं को प्रस्तुत नहीं किया है"।
- माप के प्रयोजनों हेतु बलात् श्रम को ऐसे कार्य के रूप में परिभाषित किया गया है जो अनैच्छिक तथा दंड या दंड (बलात्) के खतरे के अधीन होते हैं।
  - अनैच्छिक कार्य से तात्पर्य कार्यकर्ता की स्वतंत्र तथा सूचित सहमति के बिना किये गए किसी भी कार्य से है।
  - बलात् से तात्पर्य उन साधनों से है जिनका उपयोग किसी को उनकी स्वतंत्र तथा सूचित सहमति के बिना काम करने हेतु मजबूर करने के लिये किया जाता है।

## रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- अवैध लाभ में वृद्धि:
  - बलात् श्रम से प्रतिवर्ष 36 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अवैध रूप से लाभ होता है, जो वर्ष 2014 के बाद से 37% की वृद्धि दर्शाता है।
  - इस वृद्धि का कारण श्रम के लिये मजबूर लोगों की संख्या में वृद्धि और लाभ दोनों ही होते हैं।
- अवैध लाभ का क्षेत्रीय वितरण:
  - बलात् श्रम से होने वाला कुल वार्षिक अवैध लाभ यूरोप तथा मध्य एशिया (84 बिलियन अमेरिकी डॉलर) में सबसे अधिक है, इसके बाद एशिया और प्रशांत (62 बिलियन अमेरिकी डॉलर), अमेरिका (52 बिलियन अमेरिकी डॉलर), अफ्रीका (20 बिलियन अमेरिकी डॉलर) तथा अरब देशों (18 अरब अमेरिकी डॉलर) का स्थान है।

## Illegal annual profits from forced commercial sexual exploitation



//

### ■ प्रतापीडित लाभ सृजन:

- अनुमान है कि तस्करी और अपराधी प्रतापीडित लगभग 10,000 अमेरिकी डॉलर कमाते हैं, जो एक दशक पूर्व 8,269 अमेरिकी डॉलर के आँकड़ों से अधिक है।
- नज्दी तौर पर लगाए गए श्रम में पीड़ितों की कुल संख्या का केवल 27% होने के बावजूद बलात् वाणज्यिक यौन शोषण कुल अवैध मुनाफे का दो-तर्हिाई (73%) से अधिक है।

### ■ सर्वाधिक अवैध लाभ वाले क्षेत्र:

- बलात् व्यावसायिक यौन शोषण के बाद, बलात् श्रम से सबसे अधिक वार्षिक अवैध लाभ के क्षेत्र उद्योग (35 बिलियन अमेरिकी डॉलर) है, इसके बाद सेवा क्षेत्र (20.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर), कृषि (5.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर) और घरेलू काम (2.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर) हैं।
  - उद्योग क्षेत्र में **खनन एवं उत्खनन, वनरिमाण, नरिमाण और उपयोगिताएँ** शामिल हैं।
  - सेवा क्षेत्र में **थोक एवं व्यापार, आवास और खाद्य सेवा गतिविधियाँ, कला तथा मनोरंजन, व्यक्तिगत सेवाएँ, प्रशासनिक व सहायता सेवाएँ, शक्ति, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सेवाएँ और परिवहन तथा भंडारण से संबंधित गतिविधियाँ** शामिल हैं।
  - कृषि क्षेत्र में **वानिकी, शिकार के साथ-साथ फसलों की खेती, पशुपालन और मत्स्यन** शामिल है।
  - घरेलू कार्य तृतीय पक्ष के घरों में किया जाता है।

### ■ बलात् मजदूरी कराने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि:

- वर्ष 2021 में किसी भी दिन 27.6 मिलियन लोग बलात् श्रम में लगे हुए थे, जो वर्ष 2016 के बाद से 2.7 मिलियन की वृद्धि दर्शाता है।

### ■ सफिरशिन:

- **व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता:** रिपोर्ट अवैध लाभ प्रवाह को रोकने और अपराधियों को जवाबदेह ठहराने के लिये प्रवर्तन उपायों में नविश की तत्काल आवश्यकता पर बल देती है।
  - यह वैधानिक फ्रेमवर्क को सुदृढ़ करने, प्रवर्तन अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण प्रदान करने, उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में श्रम नरिक्षण का वसितार करने और श्रम एवं आपराधिक कानून प्रवर्तन के बीच बेहतर समन्वय के महत्त्व को रेखांकित करती है।
- **मूल कारणों से नपिटना:** हालाँकि कानून प्रवर्तन उपाय महत्त्वपूर्ण हैं, रिपोर्ट इस बात पर बल देती है कि बलात् श्रम को केवल प्रवर्तन कार्यों के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता है। यह एक व्यापक दृष्टिकोण का हसिसा होना चाहिये जो मूल कारणों का पता लगाकर पीड़ितों की सुरक्षा को प्राथमिकता देता है।
- **नषिपक्ष भरती प्रकरियाओं को बढ़ावा देना:** नषिपक्ष भरती प्रकरियाओं को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि बलात् श्रम के मामले अमूमन भरती के दुरुपयोग से संबंधित हो सकते हैं। बलात् श्रम से नपिटने के लयिश्रमिकों की सामूहिक रूप से जुडने और सौदेबाज़ी करने की स्वतंत्रता सुनशिचति करना भी आवश्यक है।

## बलात् श्रम से नपिटने के लयि भारत की क्या पहल हैं?

### ■ अनुच्छेद 23:

- यह मानव तस्करी पर रोक लगाता है जिसमें बलात् शर्म, गुलामी अथवा शोषण के उद्देश्य से की जाने वाली तस्करी भी शामिल है।
- यह अनुच्छेद उक्त प्रथाओं के वरिद्ध सुरक्षा सुनिश्चिती करते हुए व्यक्तियों की गरमा और अधिकारों को मान्यता प्रदान करता है।
- **संवधान का अनुच्छेद 24:**
  - इस अनुच्छेद के अनुसार चौदह वर्ष से कम आयु के किसी भी बच्चे को किसी कारखाने अथवा खदान में कार्य करने अथवा कसिअन्य हानिकारक रोजगार में नयिोजति नहीं कया जाएगा।
- **पेंसलि पोर्टल, 2017 नो चाइलड लेबर हेतु प्रभावी प्रवर्तन मंच:**
  - यह एक इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य बाल शर्म मुक्त समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने में केंद्र, राज्य, ज़िला, सरकार, नागरिक समाज और आम जनता को शामिल करना है।
  - इसे बाल शर्म अधिनियम और राष्ट्रीय बाल शर्म परयोजना (NCLP) योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिये शुरू कया गया था।
- **बँधुआ मज़दूर प्रणाली (उत्सादन) अधिनियम 1976:**
  - यह अधिनियम समग्र भारत में लागू होता है कति संबंधित राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वयित कया जाता है। यह सतर्कता समतियों के रूप में ज़िला स्तर पर एक संस्थागत तंत्र का प्रावधान करता है।
    - सतर्कता समतियों ज़िला मजस्ट्रेट (DM) को इस अधिनियम के प्रावधानों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु सलाह देती हैं।
  - राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्र के एक कार्यकारी मजस्ट्रेट को इस अधिनियम के तहत अपराधों की सुनवाई के लिये प्रथम श्रेणी या द्वितीय श्रेणी के न्यायिक मजस्ट्रेट की शक्तियाँ प्रदान की गई हैं।
- **बँधुआ मज़दूरों के पुनर्वास के लिये केंद्रीय क्षेत्र योजना (2021):**
  - शर्म और रोजगार मंत्रालय ने वर्ष 2021 में बँधुआ मज़दूरों के पुनर्वास (2016) की योजना को नया रूप दिया, जिससे बचाए गए व्यक्तियों को ज़िला प्रशासन द्वारा 30,000 रुपए की तत्काल वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
  - यह योजना ज़िला स्तर पर एक बँधुआ मज़दूर पुनर्वास कोष के निर्माण का भी प्रावधान करती है, जिसमें ज़िला मजस्ट्रेट के नपिटान में कम-से-कम 10 लाख रुपए का स्थायी कोष होगा।
    - मुक्त कराए गए बँधुआ मज़दूरों को तत्काल मदद पहुँचाने के लिये इस कोष का नवीनीकरण कया जा सकता है।

## अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन क्या है?

- **परचिय:**
  - **अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन** वर्ष 1919 से संयुक्त राष्ट्र की एकमात्र त्रपिकषीय संस्था है। यह शर्म मानक निर्धारित करने, नीतियों को विकसित करने एवं सभी महिलाओं तथा पुरुषों के लिये सभ्य कार्य को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम तैयार करने हेतु 187 सदस्य देशों की सरकारों, नयिोक्ताओं और शर्मिकों को एक साथ लाता है।
- **स्थापना:**
  - वर्ष 1919 में वरसाय की संधिद्वारा राष्ट्र संघ की एक संबद्ध एजेंसी के रूप में इसकी स्थापना हुई।
  - वर्ष 1946 में यह संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध पहली वशिष्ट एजेंसी बन गया।
- **मुख्यालय:** जेनेवा, स्वटिज़रलैंड।
- **संस्थापक मशिन:** वैश्विक एवं स्थायी शांति हेतु सामाजिक न्याय आवश्यक है।
  - अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मानवाधिकारों एवं शर्मिक अधिकारों को बढ़ावा देता है।
- **नोबेल शांति पुरस्कार:**
  - वर्ष 1969 में नमिनलखिति कार्यों के लिये नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान कया गया-
    - वभिन्न सामाजिक वर्गों के मध्य शांति स्थापित करने हेतु
    - शर्मिकों के लिये सभ्य कार्य एवं न्याय का पक्षधर
    - अन्य विकासशील राष्ट्रों को तकनीकी सहायता प्रदान करना

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

?????????:

प्रश्न. अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन के 138 एवं 182 अभसिमय कसिसे संबंधित हैं? (2018)

- बाल शर्म
- कृषि के तरीकों का वैश्विक जलवायु परिवर्तन से अनुकूलन
- खाद्य कीमतों एवं खाद्य सुरक्षा का वनियमन
- कार्यस्थल पर लगी समानता

उत्तर: (a)

**??????:**

प्रश्न. राष्ट्रीय बाल नीतिके मुख्य प्रावधानों का परीक्षण कीजिये तथा इसके क्रियान्वयन की प्रस्थितिपर प्रकाश डालिये। (2016)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/profits-and-poverty-the-economics-of-forced-labour>

